WEATHER REPORT
NORTH :
CENTRAL :
SOUTH :

NEWSLETTER

Saturday,26 October 2024,Volume - 121

GOLD : 78577
SILVER : 97269
CRUD : 6040

News | Cotton Weekly Physical chart | Share Market Update | Important News

कपास बीजों पर बारिश का असर: उत्पादन और तेल निष्कर्षण प्रक्रिया में चुनौतियाँ

भारत में सूती धागे के प्रसंस्करण का इतिहास प्राचीन काल से है, सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1300 ईसा पूर्व) कपास की खेती और कपड़ा उत्पादन के शुरुआती केंद्रों में से एक थी। शुरुआती कताई तकनीकों में उच्च गुणवत्ता वाले कपड़े बनाने के लिए स्पिंडल और व्होरल जैसे सरल उपकरणों का उपयोग किया जाता था। मध्यकालीन काल के दौरान, चरखे (कताई चक्र) ने सूत उत्पादन में क्रांति ला दी, प्रक्रिया को गति दी और सूती वस्त्रों में भारत के वैश्विक प्रभुत्व को बढ़ावा दिया, जिसमें मलमल और केलिको जैसे बेशकीमती कपड़े शामिल थे।

1947 में स्वतंत्रता के बाद, भारत ने आधुनिकीकरण के माध्यम से अपने कपास उद्योग को पुनर्जीवित किया। मशीनीकृत कताई मिलों की स्थापना की गई, और रिंग फ्रेम और ओपन-एंड स्पिनिंग जैसी आधुनिक तकनीकों ने पारंपरिक तरीकों की जगह ले ली, जिससे भारत दुनिया के शीर्ष कपास यार्न उत्पादकों और निर्यातकों में से एक बन गया। आज, जैविक कपास और पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं सहित टिकाऊ कपास उत्पादन पर एक मजबूत ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जिससे भारत को उद्योग में अपना वैश्विक नेतृत्व बनाए रखने में मदद मिल रही है।

भारत कपास यार्न के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है, जिसके देश भर में हजारों कताई इकाइयाँ हैं। देश का कपड़ा उद्योग विविधतापूर्ण है, जो शुद्ध कपास के अलावा मिश्रित यार्न की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करता है। यहाँ कताई इकाइयों और भारत में उत्पादित प्रमुख मिश्रित किस्मों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

भारत में कताई इकाइयाँ

भारत में लगभग 3,400+ कताई मिलें विभिन्न राज्यों में संचालित हैं, विशेष रूप से प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्रों में जैसे:
तमिलनाडु (कताई इकाइयों का प्रमुख केंद्र) महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, आंध्र प्रदेश , कर्नाटक ये कताई मिलें पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों के मिश्रण का उपयोग करके सूत का उत्पादन करती हैं, जिनकी क्षमता छोटे पैमाने से लेकर बड़ी एकीकृत मिलों तक होती है।

भारत में उत्पादित प्रमुख मिश्रित किस्में

शुद्ध सूती धागे के अलावा, भारतीय कताई इकाइयाँ मिश्रित धागों की एक किस्म का उत्पादन करती हैं, जो ताकत, कोमलता और स्थायित्व जैसे गुणों को बढ़ाने के लिए कपास को अन्य रेशों के साथ मिलाती हैं। कुछ प्रमुख मिश्रित किस्मों में शामिल हैं:

कपास-पॉलिएस्टर मिश्रण :

सामान्य अनुपात: 65% कपास, 35% पॉलिएस्टर; 50% कपास, 50% पॉलिएस्टर।
विशेषताएं: पॉलिएस्टर मजबूती और टिकाऊपन प्रदान करता है, जबकि विस्कोस नरम एहसास और बेहतर ड्रेप प्रदान करता है। पीवी मिश्रणों का उपयोग सूटिंग, शर्टिंग और ड्रेस मटीरियल में किया जाता है।

कॉटन-विस्कोस मिश्रण :

सामान्य अनुपात: 70% कॉटन, 30% विस्कोस; 60% कॉटन, 40% विस्कोस।
विशेषताएं: यह मिश्रण कॉटन के प्राकृतिक एहसास के साथ-साथ विस्कोस की चिकनी, रेशमी बनावट प्रदान करता है। इसका उपयोग आमतौर पर फैशन के कपड़ों, ड्रेस और असबाब में किया जाता है।

कॉटन-ऊन मिश्रण :

सामान्य अनुपात: 80% कॉटन, 20% ऊन; 60% कॉटन, 40% ऊन।
विशेषताएं: कॉटन की सांस लेने की क्षमता को ऊन की गर्मी और इन्सुलेशन के साथ मिलाता है। इसका उपयोग सर्दियों के कपड़ों, कंबल और भारी कपड़ों के लिए किया जाता है।

पॉलिएस्टर-विस्कोस मिश्रण (PV) :

सामान्य अनुपात: 65% पॉलिएस्टर, 35% विस्कोस; 80% पॉलिएस्टर, 20% विस्कोस।
विशेषताएं: पॉलिएस्टर मजबूती और टिकाऊपन प्रदान करता है, जबकि विस्कोस नरम एहसास और बेहतर ड्रेप प्रदान करता है। पीवी मिश्रणों का उपयोग सूटिंग, शर्टिंग और ड्रेस मटीरियल में किया जाता है।

कॉटन-लिनन मिश्रण :

सामान्य अनुपात: 60% कॉटन, 40% लिनन; 70% कॉटन, 30% लिनन।
विशेषताएं: लिनन एक कुरकुरा बनावट प्रदान करता है, जबकि कॉटन कोमलता और आराम प्रदान करता है। यह मिश्रण गर्मियों के कपड़ों और टेबल लिनन और पर्दे जैसे घरेलू वस्त्रों के लिए लोकप्रिय है।

रुझान और विकास

भारत का कताई उद्योग रोटर कताई और कॉम्पैक्ट कताई जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाने के साथ आधुनिकीकरण जारी रखता है, जिससे उत्पादन क्षमता और यार्न की गुणवत्ता दोनों में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों में हरित वस्त्रों की मांग को पूरा करने के लिए जैविक कपास-पॉलिएस्टर मिश्रण और पुनर्नवीनीकृत फाइबर मिश्रण जैसे टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल मिश्रणों के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE
FOR MORE INFORMATION
CONTACT - +91 - 91119 77775

कपास बाजार की साप्ताहिक गतिविधि पर एक नजर

SMART INFO SERVICES CALL : 91116 77771 WEEKLY CHART 26.10.2024			
ICE COTTON			
MONTH	18.10.24	25.10.24	WEEKLY CHANGE
DEC	70.99	70.66	-0.33
MAR'25	73.09	72.85	-0.24
MAY'25	74.53	74.39	-0.14
MCX (COTTON)			
NOV	56990	56050	-940
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1574	1554	-20
NCDEX (COCUD KHAL)			
DEC	3014	2950	-64
JAN	2942	2902	-40
FEB	2944	2922	-22
SMART INFO SERVICE		**CALL : 91116 77771**	
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	84.07	84.08	0.01
PAK (Pakistani Rupee)	277.792	277.752	-0.04
CNY (Chinese yuan)	7.10157	7.11995	0.01838
BRAZIL (Real)	5.69279	5.70796	0.01517
AUSTRALIAN Dollar	1.49055	1.51376	0.02321
MALAYSIAN RINGGITS	4.30400	4.34038	0.03638
COTLOOK "A" INDEX	82.35	83.25	0.9
BRAZIL COTTON INDEX	68.7	69.76	1.06
USDA SPOT RATE	65.17	65.20	0.03
MCX SPOT RATE	56300	56200	-100
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	17800	17800	0
GOLD ($)	2730.00	2754.60	24.6
SILVER ($)	33.234	33.779	0.545
CRUDE ($)	69.22	71.35	2.13

इस सप्ताह इंटरनेशनल मार्केट में मिला-जुला रुख देखने को मिला।

जहां दिसंबर में 0.33 सेंट, मार्च में 0.24 सेंट, और मई में 0.14 सेंट की गिरावट दर्ज हुई।

भारतीय बाजार में MCX पर कॉटन के दामों में भी नवंबर माह में 940 रुपये की गिरावट दर्ज की गई।

NCDEX पर कपास के भाव 20 रुपये प्रति 20 किलो तक घटे, वहीं खल के भाव में भी दिसंबर में 64 रुपये, जनवरी में 40 रुपये, और फरवरी में 22 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट दर्ज की गई।

दूसरे देशों के कॉटन मार्केट की बात करें तो कॉटलुक "ए" इंडेक्स में बढ़त हुई, USDA स्पॉट रेट में 0.03 सेंट की बढ़त दर्ज हुई, जबकि MCX स्पॉट रेट में 100 रुपये प्रति कैंडी की कमी देखने को मिली।

SMART INFO SERVICES
india.smartinfo@gmail.com
Call : 91116 77771

DATE: 26.10.2024

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	21.10.2024		26.10.2024		CHANGE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,800	5,810	5,720	5,730	-80
HARYANA	27.5/28	5,790	5,790	5,700	5,700	-90
UPPER RAJASTHAN	28	5,780	5,790	5,700	5,710	-80
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	55,700	56,300	55,000	55,500	-800
MADHYA PRADESH	29	55,000	55,200	54,700	55,000	-200
MAHARASHTRA	29+ vid.	57,000	57,500	56,500	56,700	-800
SMART INFO SERVICES CALL : 91116 77771						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	57,700	57,800	57,200	57,300	-500
KARNATAKA	29.5+	54,500	54,800	53,800	54,200	-600
ANDHRA PRADESH	29 mic 4+	56,000	56,500	56,000	56,500	0
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	54,000	55,000	53,000	54,300	-700
NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.						
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy						

इस सप्ताह रुई बाजार में गिरावट देखने को मिला।

इस सप्ताह रुई बाजार में गिरावट देखने को मिला।

नॉर्थ ज़ोन के पंजाब में 80 रुपये, हरियाणा में 90 रुपये, और अपर राजस्थान में 80 रुपये प्रति मन तक की गिरावट दर्ज की गई।

वहीं, सेंट्रल ज़ोन के गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र में 200-800 रुपये प्रति कैंडी की गिरावट देखी गई।

साउथ ज़ोन के कर्नाटक, ओडिशा, तेलंगाना, आँध्रप्रदेश में 500 से 700 रुपये प्रति कैंडी की कमी आई ।

बढ़ाएं अपना व्यापार

इंडस्ट्री से जुड़े 50 हज़ार से ज़्यादा लोगों तक पहुचाएं अपने व्यापार की हर जानकारी हमारे माध्यम से पाएं अपने व्यापार को बढ़ाने का

जानकारी के लिये संपर्क करें :-
+91-9111677775

बेमौसम बारिश से कपास की फसल को नुकसान, किसानों को कम कीमतों की आशंका

इंदौर: हाल ही में हुई बेमौसम बारिश ने खड़ी कपास की फसलों को काफी नुकसान पहुंचाया है, जिससे किसानों में अपनी उपज के कम दाम मिलने की चिंता बढ़ गई है।

किसानों ने बताया कि बेमौसम बारिश ने कपास की कटाई की प्रक्रिया में भी देरी की है। आमतौर पर कपास की कटाई का मौसम सितंबर के मध्य में शुरू होता है और अक्टूबर और नवंबर तक चलता है। पहली कटाई पूरी हो चुकी है, जबकि दूसरी अभी भी चल रही है।

खड़ी फसल को नुकसान के साथ-साथ गुणवत्ता संबंधी चिंताओं ने नई कटाई की गई कपास को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। कपास किसान और जिनिंग यूनिट के मालिक कैलाश अग्रवाल ने कहा, "बारिश ने कपास की गुणवत्ता को प्रभावित किया है और खड़ी फसल को नुकसान पहुंचाया है। इन गुणवत्ता संबंधी मुद्दों के कारण हाजिर बाजार में कीमतें कम हो गई हैं।"

कपास व्यापारियों के अनुसार, खरगोन बाजार में नई कटाई की गई कच्ची कपास की कीमत 3,500 रुपये से 7,500 रुपये प्रति क्विंटल के बीच है। यह विस्तृत मूल्य सीमा गुणवत्ता संबंधी मुद्दों और बारिश के कारण बढ़ी हुई नमी को दर्शाती है।

इंदौर संभाग में लगभग 19 लाख हेक्टेयर में कपास की खेती की जाती है, जिसमें खरगोन, खंडवा, बड़वानी, मनावर, धार, रतलाम और देवास प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्र हैं।

मध्य प्रदेश कॉटन जिनर्स एंड ट्रेडर्स एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष मंजीत सिंह चावला ने कहा कि बारिश ने गुणवत्ता को प्रभावित किया है, लेकिन कपास की फसलों को नुकसान अन्य फसलों की तुलना में उतना गंभीर नहीं है। "इस सीजन में कपास का उत्पादन कुल मिलाकर अनुकूल रहने की उम्मीद है, क्योंकि हाल ही में हुई बारिश को छोड़कर, बुवाई और विकास के दौरान मौसम की स्थिति अनुकूल थी।"

कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने 2024-25 सीजन के लिए मध्य प्रदेश का कपास उत्पादन 19 लाख गांठ (1 गांठ = 170 किलोग्राम) होने का अनुमान लगाया है।

NEWS OF THE WEEK

- **यादगीर में कपास के किसानों को भारी बारिश के कारण नुकसान का सामना करना पड़ रहा है।**

यादगीर जिले में हाल ही में हुई भारी बारिश के कारण मौसम में गिरावट आई है, जिससे पिछले कुछ दिनों में ठंड और बादल छाए हुए हैं, जिससे कपास की फसलों को गंभीर खतरा है। कई खेत, खासकर कपास के खेत, या तो पानी से लबालब हैं या बारिश के कारण नुकसान हुआ है।

- **अमरेली जिले में किसानों की दिवाली हुई फीकी, भारी बारिश से कपास की फसल को 15 लाख का नुकसान है।**

अमरेली जिले में बेमौसम बारिश ने किसानों को भारी नुकसान पहुँचाया है। जिले के बाबरा तालुका के चामरडी गांव के एक किसान की 90 बीघा कपास की फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई, जिससे उन्हें करीब 15 लाख रुपये का नुकसान हुआ है। किसान इस विपरीत परिस्थिति से जूझ रहे हैं।

- **अत्यधिक वर्षा के कारण भारत का कपास उत्पादन 7.4% घटने की संभावना है।**

मंगलवार को एक प्रमुख व्यापार निकाय के अनुसार, 2024/25 सीज़न के लिए भारत का कपास उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में 7.4% घटकर 30.2 मिलियन गांठ रहने का अनुमान है, जिसका मुख्य कारण खेती का कम क्षेत्र और अत्यधिक वर्षा के कारण फसल का नुकसान है।

देश भर के प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों में इस सप्ताह कपास की आवक

SMART INFO SERVICES

ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL

CALL : 91116 77771

STATE	21.10.24	22.10.24	23.10.24	24.10.24	25.10.24	26.10.24
PUNJAB	1,000	1,000	1,200	1,200	1,200	1,200
HARYANA	5,000	5,000	5,000	5,500	5,000	5,000
UPPER RAJASTHAN	2,000	2,000	2,500	2,200	2,200	2,200
LOWER RAJASTHAN	3,300	3,100	3,500	3,300	3,500	3,500
NORTH ZONE	11,300	11,100	12,200	12,200	11,900	11,900
GUJARAT	16,000	16,000	20,000	21,000	23,000	25,000
MADHYA PRADESH	8,000	9,000	10,000	12,000	12,000	9,000
MAHARASHTRA	5,000	5,500	7,000	8,000	7,500	12,000
CENTRAL ZONE	29,000	30,500	37,000	41,000	42,500	46,000
KARNATAKA	18,000	18,000	20,000	20,000	18,000	17,000
ANDHRA PRADESH	10,000	11,000	11,000	12,000	10,000	9,000
TELANGANA	11,000	15,000	17,000	15,000	17,000	18,000
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	39,000	44,000	48,000	47,000	45,000	44,000
ODISHA	-	-	-	-	-	-
TOTAL	79,300	85,600	97,200	100,200	99,400	101,900
ARRIVAL IN 170 Kg.						

WEATHER REPORT

NORTH :
CENTRAL :
SOUTH :

NEWSLETTER

Saturday ,26 October 2024 , Volume - 121

GOLD : 78577
SILVER : 97269
CRUD : 6040

News | Cotton Weekly Physical chart | Share Market Update | Important News

History of cotton yarn processing in India and major composite varieties

The history of cotton yarn processing in India dates back to ancient times, with the Indus Valley Civilization (3300–1300 BC) being one of the earliest centers of cotton cultivation and textile production. Early spinning techniques used simple tools such as spindles and whorls to produce high--quality fabrics. During the medieval period, the charkha (spinning wheel) revolutionized yarn production, speeding up the process and leading to India's global dominance in cotton textiles, including prized fabrics such as muslin and calico.

After independence in 1947, India revived its cotton industry through modernization. Mechanized spinning mills were set up, and modern techniques such as ring frame and open--end spinning replaced traditional methods, making India one of the world's top cotton yarn producers and exporters. Today, there is a strong focus on sustainable cotton production, including organic cotton and eco-friendly practices, helping India maintain its global leadership in the industry.

India is one of the largest producers of cotton yarn, with thousands of spinning units across the country. The country's textile industry is diversified, producing a wide range of blended yarns in addition to pure cotton. Here is a brief description of the spinning units and the major blended varieties produced in India:

Spinning Units in India

There are around 3,400+ spinning mills operating in India in various states, especially in major cotton producing areas such as:

Tamil Nadu (major hub of spinning units) Maharashtra, Gujarat, Punjab, Andhra Pradesh, Karnataka These spinning mills produce yarn using a mix of traditional and modern techniques, with capacities ranging from small-scale to large integrated mills.

Major Blended Varieties Produced in India

Apart from pure cotton yarn, Indian spinning units produce a variety of blended yarns, which combine cotton with other fibres to enhance properties such as strength, softness, and durability. Some of the major blended varieties include:

Cotton-Polyester Blends:

Common proportions: 65% cotton, 35% polyester; 50% cotton, 50% polyester.

Features: Combines the softness of cotton with the strength and wrinkle resistance of polyester. This blend is widely used for apparel, home textiles, and industrial fabrics.

Cotton-viscose blend :

Common ratios: 70% cotton, 30% viscose; 60% cotton, 40% viscose.
Features: This blend offers the natural feel of cotton as well as the smooth, silky texture of viscose. It is commonly used in fashion garments, dresses, and upholstery.

Cotton-wool blend :

Common ratios: 80% cotton, 20% wool; 60% cotton, 40% wool.
Features: Combines the breathability of cotton with the warmth and insulation of wool. It is used for winter clothing, blankets, and heavy clothing.

Polyester-viscose blend (PV) :

Common ratios: 65% polyester, 35% viscose; 80% polyester, 20% viscose.
Features: Polyester provides strength and durability, while viscose provides soft feel and better drape. PV blends are used in suiting, shirting and dress materials.

Cotton-Linen Blends :

Common proportions: 60% cotton, 40% linen; 70% cotton, 30% linen.
Features: Linen provides a crisp texture, while cotton provides softness and comfort. This blend is popular for summer clothing and home textiles like table linen and curtains.

Trends and Developments

India's spinning industry continues to modernise with the adoption of advanced technologies such as rotor spinning and compact spinning, improving both production efficiency and yarn quality. Additionally, there is a growing focus on producing sustainable and eco-friendly blends such as organic cotton-polyester blends and recycled fibre blends to meet the demand for green textiles in both domestic and international markets.

look at the weekly movement of the cotton market

SMART INFO SERVICES CALL : 91116 77771 WEEKLY CHART 26.10.2024			
ICE COTTON			
MONTH	18.10.24	25.10.24	WEEKLY CHANGE
DEC	70.99	70.66	-0.33
MAR'25	73.09	72.85	-0.24
MAY'25	74.53	74.39	-0.14
MCX (COTTON)			
NOV	56990	56050	-940
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1574	1554	-20
NCDEX (COCUD KHAL)			
DEC	3014	2950	-64
JAN	2942	2902	-40
FEB	2944	2922	-22
SMART INFO SERVICE		**CALL : 91116 77771**	
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	84.07	84.08	0.01
PAK (Pakistani Rupee)	277.792	277.752	-0.04
CNY (Chinese yuan)	7.10157	7.11995	0.01838
BRAZIL (Real)	5.69279	5.70796	0.01517
AUSTRALIAN Dollar	1.49055	1.51376	0.02321
MALAYSIAN RINGGITS	4.30400	4.34038	0.03638
COTLOOK "A" INDEX	82.35	83.25	0.9
BRAZIL COTTON INDEX	68.7	69.76	1.06
USDA SPOT RATE	65.17	65.20	0.03
MCX SPOT RATE	56300	56200	-100
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	17800	17800	0
GOLD ($)	2730.00	2754.60	24.6
SILVER ($)	33.234	33.779	0.545
CRUDE ($)	69.22	71.35	2.13

This week, a mixed trend was seen in the international market.

Where there was a decline of 0.33 cents in December, 0.24 cents in March, and 0.14 cents in May.

In the Indian market, cotton prices on MCX also declined by Rs 940 in the month of November.

The price of cotton on NCDEX fell by Rs 20 per 20 kg, while the price of oil cake also declined by Rs 64 in December, Rs 40 in January, and Rs 22 per quintal in February.

Talking about the cotton market of other countries, the Cotlook "A" index increased, USDA spot rate increased by 0.03 cents, while MCX spot rate saw a decline of Rs 100 per candy.

SMART INFO SERVICES
india.smartinfo@gmail.com
Call : 91116 77771

DATE: 26.10.2024

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	21.10.2024		26.10.2024		CHANGE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,800	5,810	5,720	5,730	-80
HARYANA	27.5/28	5,790	5,790	5,700	5,700	-90
UPPER RAJASTHAN	28	5,780	5,790	5,700	5,710	-80
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	55,700	56,300	55,000	55,500	-800
MADHYA PRADESH	29	55,000	55,200	54,700	55,000	-200
MAHARASHTRA	29+ vid.	57,000	57,500	56,500	56,700	-800
SMART INFO SERVICES CALL : 91116 77771						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	57,700	57,800	57,200	57,300	-500
KARNATAKA	29.5+	54,500	54,800	53,800	54,200	-600
ANDHRA PRADESH	29 mic 4+	56,000	56,500	56,000	56,500	0
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	54,000	55,000	53,000	54,300	-700
NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.						
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy						

This week, the cotton market witnessed a decline.

This week, the cotton market witnessed a decline.

In the North Zone, Punjab witnessed a decline of Rs 80, Haryana Rs 90 and Upper Rajasthan Rs 80 per maund.

At the same time, in the Central Zone, Gujarat, Madhya Pradesh and Maharashtra witnessed a decline of Rs 200-800 per candy.

In the South Zone, Karnataka, Odisha, Telangana and Andhra Pradesh, there was a decline of Rs 500 to Rs 700 per candy.

Grow your business now

Get every information about your business to more than 50 thousand people related to the industry. Get a golden opportunity to grow your business through us.

For more information, contact-
+91-9111677775

Unseasonal rains damage cotton crop, farmers fear low prices

Indore: The recent unseasonal rains have caused extensive damage to standing cotton crops, raising concerns among farmers about getting low prices for their produce.

Farmers said the unseasonal rains have also delayed the cotton harvesting process. Usually, the cotton harvesting season begins in mid-September and continues through October and November. The first harvest has been completed, while the second is still underway.

Along with the damage to the standing crop, quality concerns have also negatively impacted the newly harvested cotton. "The rains have impacted the quality of cotton and damaged the standing crop. Due to these quality issues, prices have dropped in the spot market," said Kailash Agarwal, a cotton farmer and ginning unit owner.

According to cotton traders, the price of newly harvested raw cotton in the Khargone market is between Rs 3,500 and Rs 7,500 per quintal. This wide price range reflects quality issues and increased moisture due to rains.

Cotton is cultivated in about 19 lakh hectares in Indore division, with Khargone, Khandwa, Barwani, Manawar, Dhar, Ratlam and Dewas being the major cotton producing areas.

Manjit Singh Chawla, founder president of Madhya Pradesh Cotton Ginners and Traders Association, said the rains have affected quality, but damage to cotton crops is not as severe as compared to other crops. "Cotton production is expected to be favourable overall this season, as weather conditions were favourable during sowing and growth, except for the recent rains."

The Cotton Association of India has estimated Madhya Pradesh's cotton production for the 2024-25 season at 19 lakh bales (1 bale = 170 kg).

NEWS OF THE WEEK

Cotton farmers in Yadgir are facing losses due to heavy rains.

The recent heavy rains in Yadgir district have worsened the weather, leading to cold and cloudy weather in the last few days, posing a serious threat to cotton crops. Many fields, especially cotton fields, are either flooded with water or have suffered damage due to the rains.

Diwali of farmers in Amreli district turned dull, cotton crop suffers loss of Rs 15 lakh due to heavy rains.

Unseasonal rains have caused heavy losses to farmers in Amreli district. A farmer's 90 bigha cotton crop of Chamardi village in Babra taluka of the district was completely destroyed, causing him a loss of about Rs 15 lakh. Farmers are struggling with this adverse situation.

India's cotton output likely to fall 7.4% due to excessive rains

India's cotton output for the 2024/25 season is estimated to fall 7.4% to 30.2 million bales compared to the previous year, mainly due to lower area under cultivation and crop damage caused by excessive rainfall, according to a leading trade body on Tuesday.

Cotton arrivals this week in major cotton producing states across the country

SMART INFO SERVICES

ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL

CALL : 91116 77771

STATE	21.10.24	22.10.24	23.10.24	24.10.24	25.10.24	26.10.24
PUNJAB	1,000	1,000	1,200	1,200	1,200	1,200
HARYANA	5,000	5,000	5,000	5,500	5,000	5,000
UPPER RAJASTHAN	2,000	2,000	2,500	2,200	2,200	2,200
LOWER RAJASTHAN	3,300	3,100	3,500	3,300	3,500	3,500
NORTH ZONE	11,300	11,100	12,200	12,200	11,900	11,900
GUJARAT	16,000	16,000	20,000	21,000	23,000	25,000
MADHYA PRADESH	8,000	9,000	10,000	12,000	12,000	9,000
MAHARASHTRA	5,000	5,500	7,000	8,000	7,500	12,000
CENTRAL ZONE	29,000	30,500	37,000	41,000	42,500	46,000
KARNATAKA	18,000	18,000	20,000	20,000	18,000	17,000
ANDHRA PRADESH	10,000	11,000	11,000	12,000	10,000	9,000
TELANGANA	11,000	15,000	17,000	15,000	17,000	18,000
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	39,000	44,000	48,000	47,000	45,000	44,000
ODISHA	-	-	-	-	-	-
TOTAL	79,300	85,600	97,200	100,200	99,400	101,900
ARRIVAL IN 170 Kg.						